लोक प्रशासन का एक अध्ययन विषय के रूप में विकास एवं महत्व

[EVOLUTION AND SIGNIFICANCE OF PUBLIC

ADMINISTRATION AS A DISCIPLINE]

लोक प्रशासन की कला का विकास मानव समाज के आदिकाल में ही हो गया था। इस कला के द्वारा ही वह निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहा। मिस्र में नील नदी के जल मार्गों के नियमन हेतु केन्द्रित कर्मचारीतन्त्रात्मक प्रशासन अस्तित्व में आया। यह प्रशासन की प्राचीनतम व्यवस्था कहलाई। इसी प्रकार चीन में ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में प्रतियोगिता परीक्षाओं द्वारा भर्ती की जाने वाली लोक सेवाओं का विकास हुआ। कौटिल्य रचित 'अर्थशास्त्र' में प्राचीन भारत की प्रशासन की कला पर प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ में लोक प्रशासन विषय का विस्तृत एवं व्यवस्थित ढंग से विवेचन किया गया है। रामायण एवं महाभारत में भी प्रशासन के उन्नत नियम वर्णित हैं। प्राचीन यूनान के नगर राज्यों में भी लोक प्रशासन का संगठित रूप विद्यमान है। रोमन शासकों ने वैधानिक मानदण्डों के आधार पर लोक प्रशासन की स्थापना की। इनमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र' को प्रशासनिक चिन्तन का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है। अरस्तू के ग्रन्थ 'पॉलिटिक्स' एवं मैकियावली के 'प्रिंस' को भी प्रशासन एवं सरकार की कला पर उत्कृष्ट ग्रन्थ माना जाता है। अतः स्पष्ट है कि प्राचीनकाल से ही प्रशासनिक विचारधारा' चिन्तन का एक महत्वपूर्ण विषय रही है। प्रशा विश्व का प्रथम देश था जिसने अपनी लोक सेवा के कर्मचारियों को योग्यता एवं गुणों के आधार पर भर्ती किया। कालान्तर में अन्य देशों ने भी इस पद्धति का अनुसरण किया। तदुपरान्त औद्योगिक क्रान्ति, लोकतन्त्र का विकास एवं विश्व युद्धों आदि के कारण प्रशासनिक कार्य एवं प्रशासनिक समस्याएँ अधिकाधिक जटिल होती चली गई। इन परिस्थितियों में लोक प्रशासकों के उत्तरदायित्वों में

उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली गई। एक अध्ययन विषय के रूप में लोक प्रशासन का विकास

(EVOLUTION OF PUBLIC ADMINISTRATION AS A SUBJECT OF STUDY)

लोक प्रशासन का अस्तित्व एक क्रिया के रूप में प्राचीनकाल से रहा है, किन्तु अध्ययन विषय के रूप में इसका उदय वर्तमान काल में ही हुआ है। सत्रहवीं शताब्दी तक 'लोक प्रशासन' शब्द अस्तित्व में नहीं आया था। इस शब्द का प्रयोग अठारहवीं शताब्दी में सर्वप्रथम अमेरिकी वित्त मन्त्री अलेक्जेण्डर हेमिल्टन ने किया। लोक प्रशासन पर पहली पुस्तक सन् 1812 में फ्रेंच लेखक चार्ल्स जीन बोनिन (Charles Jean Bounin) ने लिखी। एक अध्ययन विषय के रूप में लोक प्रशासन के विकास को निम्नलिखित चरणों में विभक्त किया जा सकता है

(1) प्रथम चरण (1887-1926) - एक अध्ययन के अनुशासन के रूप में प्रो. वुडरो विल्सन को लोक प्रशासन का जन्मदाता माना जाता है। अमेरिकी विद्वान वुडरो विल्सन द्वारा सन् 1887 में प्रकाशित लेख 'प्रशासन का अध्ययन' (A Study of Administration) इस दिशा में एक युग परिवर्तनकारी घटना थी। इस लेख में उन्होंने राजनीति एवं प्रशासन को पृथक्-पृथक् बताया। विल्सन के शब्दों में "प्रशासन राजनीति के क्षेत्र से बाहर पड़ता है। प्रशासनिक सवाल राजनीतिक सवाल नहीं होते। यद्यपि राजनीति ही प्रशासन के लक्ष्य करती है। किन्तु इसे प्रशासनिक कार्यालयों को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करना चाहिये।" उन्होंने स्पष्ट किया कि संविधान की रचना सरल है, किन्तु उसको चलाना कठिन है। इस सन्दर्भ में एक अन्य उल्लेखनीय नाम कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कानून के प्राध्यापक 'फ्रँक जे. गुडनॉव' का लिया जाता है जिन्होंने सन् 1900 में 'राजनीति तथा प्रशासन' नामक पुस्तक लिखी। इसके अनुसार राजनीति राज्य की इच्छा नौतियों का प्रतिपादन करती है, जबकि प्रशासन राज्य की उस इच्छा अथवा नीतियों के क्रियान्वयन से सम्बन्धित है। इस समय अमेरिका राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव के दौर से गुजर रहा था। अतः सुधारों की माँग उठना स्वाभाविक था। परिणामतः लोक प्रशासन के अध्ययन को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया।